प्रातः क्लास 4-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप तुम बच्चों को स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। अर्थात तुम इस चक्र को जान जाते हो। आगे नहीं जानते थे। बाप द्वारा अभी तुमने जाना है। 84 जन्मों के चक्र में तुम आते हो जरूर जरूर। तुम बच्चों को 84 चक्र का नालेज देता हूं। मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूं परन्तु प्रैक्टीकल में हो तुम हम तो 84 के चक्र में आता नहीं हूं। तो इससे समझ जाना चाहिए शिव बाबा में सारा ज्ञान है। वह 84 के चक्र में नहीं आते हैं। परन्तु उनमें ज्ञान सारा है। तुम जानते हो हम ब्राह्मण अभी स्वदर्शनचक्रधारी बनते हैं। बाबा नहीं बनते हैं। फिर उनमें यह अनुभव कहां से आया। अनुभव तो हमको प्राप्त होता है। बाबा कहां से अनुभव लाता है जो हमको सुनाते हैं। प्रैक्टीकल में अनुभव हो जाना चाहिए। बाप कहते है मुझे ज्ञानसागर कहते हैं परन्तु मैं तो 84 जन्मों के चक्र में आता नहीं हूं। फिर मेरे में यह ज्ञान कहां से आया। टीचर पढ़ाते हैं तो जरूर खुद पढ़ा हुआ है ना। यह शिव बाबा कैसे पढ़ा? उनको कैसे 84 जन्मों के चक्र का मालूम पड़ा। जबकि खुद ही 84 जन्मों में नहीं आते हैं। बाप बीज रूप होने कारण जानते हैं। खुद 84 के चक्र में तो नहीं आते हैं। परन्तु तुमको समझाते हैं। यह भी कितना वन्डर है। ऐसे भी नहीं बाप कोई शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। यह बातें तो शास्त्रों में भी लिखी हुई नहीं हैं। इसमें तो गपोड़े हैं। कहा जाता है ड्रामाअनुसार उनमें यह नालेज नूंधी हुई है। जो तुमको सुनाते रहते हैं। तो वन्डरफुल टीचर हुआ ना। वन्डर खाना चाहिए। इसलिये इनको बड़े2 नाम दिये हैं। ईश्वर प्रभु अन्तर्यामी आदि2। तुम वन्डर खाते हो ईश्वर में यह सारी नालेज कैसे भरी हुई है। उनमें आई कहां से जो हमको समझाते हैं। उनका तो कोई बाप भी नहीं जिससे जन्म लिया हो। वा समझा हो। तुम सभी भाई2 हो। वह एक कैसे तुम्हारा बाप निमित्त बना हुआ है। बीज रूप है। कितनी नालेज बैठ बच्चों को सुनाते हैं। कहते हैं 84 जन्म मैं नहीं लेता हूं तुम लेते हो। तो जरूर प्रश्न उठेगा ना बाबा आप को मालूम कैसे पड़ा। बाबा कहते हैं बच्चे अनादि ड्रामा प्लैन अनुसार मेरे में पहले से ही यह नालेज है जो तुमको पढ़ाता हूं। इसलिये ही इनको ऊंच ते ऊंच भगवान कहा जाता है। खुद चक्र में नहीं आते परन्तु उनमें सारी सृष्टि चक्र के आदि मध्य अन्त की नालेज है। तो तुम बच्चों में कितनी खुशी होनी चाहिए। उनको 84 के चक्र का नालेज कहां से मिला। तुमको तो मिला बाप से। बाप में ओरीजनल नालेज है ही। उनको कहा ही जाता है नालेजफुल। कोई से पढ़ते भी नहीं हैं तो भी उनको ओरीजनल मालूम है। इसलिये नालेजफुल कहा जाता है। यह वन्डर है ना। इसलिए उनकी ऊंच ते ऊंच बड़ाई गाई जाती है। बच्चों को वन्डर लगता है बाप पर। उनको क्यों नालेजफुल कहा जाता एक तो यह समझने की बात है। दूसरी फिर क्या बात है यह चित्र तुम दिखाते हो तो कोई पूछेंगे ब्रह्मा में भी अपनी आत्मा होगी और यह जो ना० बनते हैं उनमें भी अपनी आत्मा होगी। दो आत्मायें हैं ना। एक ब्रह्मा की एक ना० की। परन्तु विचार करेंगे तो यह कोई दो आत्मायें नहीं हैं। आत्मा एक ही है। यह एक सिम्पुल दिखाया जाता है देवता का। यह ब्रह्मा सो विष्णु अर्थात ना० बनते हैं। शंकर का तो बताया वह आत्मा ही नहीं शरीर है। शरीर ही नहीं है तो आत्मा भी हो नहीं सकती। इसको कहा जाता है गुह्य बातें। बाप कहते हैं तुमको मैं गुह्य नालेज सुनाता हूं। और कोई पढ़ा न सके सिवाय बाप के। तो ब्रह्मा और विष्णु के कोई दो आत्मायें नहीं हैं। वैसे ही सरस्वती और लक्ष्मी की। तो दोनो की दो आत्मायें हैं या एक? आत्मा एक ही शरीर दो हैं। यह सरस्वती ही लक्ष्मी बनती हैं। इसलिये एक ही आत्मा गिनी जावेगी। 84 जन्म एक ही आत्मा लेती है। यह बड़ी ही समझ की बात है। ब्राह्मण सो देवता, देवता सो क्षत्री बनते हैं। आत्मा एक ही शरीर दूसरा लेती है। ये सिम्पुल दिखाया जाता है कैसे ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। हम सो ब्राह्मण, फिर हम सो क्षत्री ... इनका अर्थ कितना अच्छा है। इनको कहा जाता है गुह्य2 पायन्ट। इसमें भी पहले तो यह समझ चाहिए हम सब बाप के बच्चे हैं। सभी आत्मायें असल में परमधाम के रहने वाली हैं। यहां पार्ट बजाने आती हैं। यह खेल है। बाप तुमको इस खेल का समाचार बैठ सुनाते हैं। बाप ओरीजनल जानते ही हैं। उनको कोई ने सिखाया नहीं है। इस 84 के चक्र को

वह जानते ही हैं। जो इस समय तुमको सुनाते हैं फिर तुम भूल जाते हो। फिर उनका शास्त्र कैसे बनसकते। बाप तो कोई शास्त्र पढ़ा हुआ नहीं हैं। कैसे आकर के नई2 बातें सुनाते हैं। आधा कल्प है भक्ति मार्ग। यह बातें भी शास्त्रों में नहीं हैं। यह शास्त्र भी ड्रामा अनुसार भक्ति मार्ग में बने हैं। तुम्हारी बुधि में शुरु से लेकर अन्त तक इस ड्रामा की कितनी बड़ी नालेजे हैं। इनको जरूर मनुष्य तन का आधार लेना पड़े। शिव बाबा इस ब्राह्मा तन में बैठ यह सृष्टि चक्र का नालेज देते हैं। मनुष्यों ने तो गपोड़े लगाये सृष्टि की आयु ही कितनी लम्बी कर दी है। नई दुनिया सो फिर पुरानी दुनिया बनती है। नई दुनिया को कहा जाता है स्वर्ग। पुरानी दुनिया को कहा जाता है नर्क। दुनिया तो एक ही हैं। नई दुनिया सतयुग में रहते हैं देवी देवतायें। वहां अपार सुख है। सारी सृष्टि ही नई होती हैं। अभी इनको पुरानी कहा जाता हैं। नाम भी है आयरन एज। ओल्ड वर्ल्ड। जैसे पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली कहा जाता है ना। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चोंनई दुनिया में फिर नई दिल्ली होंगी। यह तो पुरानी दुनिया में ही कह देते हैंनई दिल्ली। इनको नई कहेंगे कैसे। बाप समझाते हैंनई दुनिया में नई दिल्ली होंगी। उनमें ल0ना0राज्य करेंगे। उसको कहा जावेगा सतयुग। तुम इस सारे भारत में राज्य करेंगे। तुम्हारी बदी जमुना के किनारे होंगी। पिछाड़ी में रावण राज्य की गदी भी यहां है। रामराज्य की गद्दी भी होंगी। इसको परिस्तान कहा जाता हैं। फिर जो जैसा राजा होता हैवह अपने गदी का ऐसा नाम रखता है। इस समय तुम सारी पुरानी दुनिया में हो। नई दुनिया में जाने लिये तुम पढ़ रहे हो। पढ़ाने वाला है बाप। उनके लिये फिर कहना कि वह ठिक्कर भितर में है कच्छ-मच्छ अवतार लेते हैं बाप कहते हैं कितने मूर्ख बन जाते हैं। कलियुग में सभी हैं अति मूर्ख पत्थर बुधि। सतयुग में तुम पारस बुधि रहते हो। नाम ही है पारस नाथ। ऊपर में पारस नाथ है। पत्थर नाथ को पारस नाथ बनाने वाला कौन है? ऊपर गुरु शिखर पर जाओ तो वहां शिव का मंदिर है। वह बनाया भी बहुत ऊंच ते ऊंच है। यह मंदिर है यादगार। जिस शिव बाबा ने विश्व में शान्ति स्थापन की। कैसे की उनका पूरा मंदिर है। ऊपर से नीचे आकर तुमको राजयोग सिखाया ऊपर छत में सारा स्वर्ग दिखाया है। तो जरूर बाप यहां आया है और आकर बच्चों को राजयोग सिखाया है। अभी तुम2। पीढ़ी स्वर्ग में जाने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। वहां अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। बेहद के बाप से 2। पीढ़ी का वरसा मिल जाता है। अभी तुम हो संगमयुग पर जब कि कलियुग पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अभी जनवरी से कहेंगे बाकी सात वर्ष। बाप ने इनका हिसाब भी बताया। मैं आता हूं ब्रह्मा तन में। मनुष्यों को तो पता नहीं हैं कि कौन है। सुना है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम प्रजा हो ना ब्रह्मा के। इसलिये अपने को ब्रह्माकुमारी कहलाती हो। वास्तव में शिव बाबा के बच्चे शिववंशी हो जब कि निराकारी आत्मायें हो। फिर साकार में प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई बहन हो। और कोई भी सम्बन्ध नहीं हैं। उस कलियुगी सम्बन्ध को तुम भूलते हो। क्योंकि उनमें बन्धन हैं। तुम जाते हो नई दुनिया में। ब्राह्मणों की चोटी छोटी होती हैं। सिक्ख को ब्राह्मण नहीं कहेंगे। चोटी ब्राह्मणों की निशानी है। सिक्ख लोगों की तो बड़ी चोटी है तो बड़ा ब्राह्मण नहीं कहेंगे। यह तो तुम ब्राह्मणों का कुल है। वह है कलियुगी ब्राह्मण। ब्राह्मण अक्सर कर के पण्डे होते हैं। एक धाभा खाते हैं। दूसरे ब्राह्मण गीता सुनाते हैं। अभी तुम ब्राह्मण भी गीता सुनाते हो। वह भी गीता सुनाते हैं फर्क देखो कितनाहै। उन ब्राह्मणों की है झूठी गीता। क्योंकि वह कहते हैंश्रीकृष्ण भगवानुवाच। तुम कहते हो कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। कृष्ण को तो देवता कहा जाता हैं। उनमें देवीगुण है। उनको तो इन आंखों से देखा जा सकता है। शिव के मंदिर में देखेंगे शिव को अपना शरीर है नहीं। वह है परमआत्मा। अर्थात परमात्मा। ईश्वर प्रभु भगवान आदि से कोई अर्थ नहीं निकलता। परम आत्मा माना परमात्मा। अर्थात वह सुप्रीम आत्मा है। तुम सुप्रीम नहीं हो। फर्क देखो कितना है तुम्हारी आत्मा और उस आत्मा में। तुम आत्मायें अभी परमात्मा से सीख रहे हो। वह कोई से सीखा नहीं है। यह तो बन्दर है ना। उस परमात्मा आत्मा को हम फादर कहते हैं। टीचर गुरु भी कहते हैं। और कोई भी आत्मा बाप टीचर गुरु नहीं बन सकती है। ———

एक ही परमआत्मा है उनको कहा जाता है फादर। बच्चों के लिये फादर है तो टीचर भी चाहिए ना। एक ही फादर टीचर भी हैं, गुरु भी हैं। हरेक को पहले फादर चाहिए। फिर टीचर चाहिए। फिर पिछाड़ी को चाहिए गुरु। आजकल तो ठग लोग हैं। ~~वैसे~~ क जो कहते हैं बच्चों को गुरु कराना चाहिए तो सदगति हो जाये। नहीं तो गुरु हमेशा पिछाड़ी में किया जाता है। तो बाप भी कहते हैं मैं तुम्हारा बाप टीचर भी बनता हूं। मैं ही तुम्हारा सद-गति दाता सद्गुरु भी बनता हूं। सदगति देने वाला गुरु है ही एक। बाकी तो अनेक गुरु हैं। वह दुर्गतिही देते हैं। बाप कहते हैं मैं तो सभी को सदगतिदाता हूं। तुम सतयुग में जावेंगे बाकी सभी शान्तिधाम चले जायेंगे। शान्तिधाम जिसको परमधाम कहते हैं। सतयुग में आदि सनातन देवी देवता धर्म था। बाकी कोई धर्म है नहीं। और सभी आत्माएं चली जाती हैं मुक्तिधाम। सदगति कहा जाता है सतयुग को। पार्ट बजाते2 फिर दुर्गति में आ जाते हैं। तुम होपूरे 84 जन्म लेते हो। यथा राजा रानी ~~वगैरह~~ तथा प्रजा जो उस समय होंगे। नव लाख तोपहले आवेंगे ना। 84 जन्म तो नव लाख लेंगे ना। फिर दूसरे आते रहेंगे। यह हिसाब किया जाता है। जो बाप बैठ समझाते हैं सभी 84 जन्म नहीं लेते हैं फिर कम कम लेते आते हैं। ~~भैसीमम~~ है 84, यह जो बातें हैं और कोई मनुष्य नहीं जानते। न सन्यासी न गुरु टीचर आदि यह सुनावेंगे। न कोई शास्त्रों में ही लिखा हुआ है। न टीचर पढ़ाते हैं। यह बाप ही बैठसमझाते हैं। गीता में है भगवानुवाच। अभी तुम समझ गये हो आदि सनातन देवी देवता धर्मकोई कृष्ण ने नहीं रचा। यह तो बाप ही स्थापन करते हैं। कृष्ण की आत्मा 84जन्मों के अन्त में वह ज्ञान सुना जो फिर ~~पहले~~ पहले नम्बर में आया। यह बातें समझने की हैं। रोज पढ़ना है। तुम स्टुडन्ट हो भगवान के। भगवानुवाच है ना। मैंतुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूं। यह है पुरानी दुनिया। नई दुनिया माना सतयुग। अभी है कलयुग। बाप आकर कलियुगी पतित से सतयुगी पावन बनाते हैं। इसलिये कलियुगी मनुष्य पुकारते हैं बाबा आकर हमको पावन ~~बनाओ~~ बनाओ। कलियुगी पतित से सतयुगी पावन बनाओ। फर्क देखो कितना है। कलियुग में है अपार दुःख। बच्चा जन्मा सुख हुआ। कल मर जावेगा दुःख हो जावेगा। सारी आयु कितना दुःख होता है। यह है ही दुःख की दुनिया। अभी बाप सुख की दुनिया स्थापन कर रहे हैं। तुमको स्वर्गवासी देवता बनाते हैं। अभी तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर हो। ~~उत्तम~~ उत्तम ते उत्तम पुरुष वा ~~नारी~~=नारी बनते हो। तुम आते ही हो यह बनने लिये। स्टुडन्ट टीचर से योग रखते हैं, क्योंकि समझते हैं इन द्वारा हम पढ़करफलाना बनेंगे। यहां तुम योग लगाते हो परमपिता परमात्मा शिव से। जो बैठ देवता बनाते हैं। कहते हैं मुझ अपने बाप शिव को याद करो। जिसके तुम शालीग्राम बच्चे हो। अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। वही नालेजफुल है। भक्ति मार्ग में झूठी गीता सुनते2तमोप्रधान बन गये हो। बाप फिर आकर सच्ची गीता सुनाते हैं। परन्तु खुद पढ़ा हुआ नहीं हैं। कहते हैं मैं किसका बच्चा हूं नहीं। कोई से पढ़ा हुआ हूं नहीं। मेरा कोई गुरु नहीं। मैं तो तुम बच्चों का बाप, टीचर, गुरु हूं। उनको कहा ही जाता है परमआत्मा। इस सारी सृष्टिके आदि मध्य अन्त को जानते हैं। जब तक वह न सुनावे तुम आदि मध्य अन्त को समझ न सको। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी, इस चक्र को जानने सेचक्रवर्ती राजा बनते हो। यह तुमको यह बाबा नहीं पढ़ाते हैं। ~~इन~~ इन में शिव बाबा प्रवेश करआत्माओं को पढ़ाते हैं। यहनई बात है ना। यह होते ही हैं संगम पर। पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। किनकी दवी रहेंगीधूल में किनकी राजा आये... धणी बच्चों को कहते हैं बहुतों का कल्याण करने लिये यह पाठशाला, म्युजियम आदि खोलो। जहां बहुत आकर सुख का वरसा पावेंगे। अभी रावण राज्य है ना। रामराज्य में था सुख। रावण राज्य में है दुःख। क्योंकि सभी विकारी बन गये हैं। वह है ही निर्विकारी दुनिया। बच्चे तो इन ल०ना० आदि के भी हैं। परन्तु वहां हैं योगबल। बाप तुमको ~~ये~~ योगबल सिखलाते हैं। योगबल से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। बाहूबल से कोई विश्व का मालिक बन न सके। लो नहीं ~~कहता~~ कहता है। तुम बच्चे बाप से याद की बल सेविश्व की बादशाही ले रहे हो। कितनी ऊंच पढ़ाई है। बाप कहते हैं पहले2 पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। पवित्र बनने से ही तुम पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंगआरनमस्ते।